SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पुस्तकालयीन भौतिक संसाधनः भवन एवं फर्नीचर के विशेष सन्दर्भ में

लाकेश कुमार साहू, लाईबेरी साइंस विभाग
मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
लाकेश कुमार साहू

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 25/08/2023
Revised on : -----
Accepted on : 01/09/2023
Plagiarism : 03% on 25/08/2023

शोध सार

इस शोध में पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर के बारे में एक विस्तृत अध्ययन किया गया है जिसमें पुस्तकालय भवन के विभिन्न कक्षों के बारें में बताया गया है और उसके मानकों के आधार पर उनके आकार एवं आकर्षण पर भी बल दिया गया है। पुस्तकालय भवनों के महत्व एवं विशेषताओं को समझानें का प्रयास इस शोध में किया गया है। पुस्तकालय भवन निर्माण में किन तत्वों की आवश्यकता होती है उन सभी तत्वों का अध्ययन इस शोध में किया गया है। एक नये पुस्तकालय भवन की योजना बनाते समय संग्रह सेवाओं, कर्मचारियों और पाठक की सुविधाओं पर विचार करना चाहिए साथ ही क्षेत्रीय संदर्भ का मूल्यांकन करना, पुस्तकालय की छवि की समीक्षा भी करना चाहिए। यह शोध वर्तमान की पुस्तकालयों की अवधारणा के विकास में आने वाली चुनौतियों की संपूर्ण जांच करने में सहायक सिद्ध होगा। इनके मिशन, भूमिकाओं का मजबूत जांच करता है। पठन शैली में पुस्तकालयाध्यक्ष को आरम्भिक सूचना संग्रहण और निर्णय लेने की प्रक्रिया के माध्यम से मार्गदर्शन करते है जो कि सभी पाठकों के लिए सफल पुस्तकालय निर्माण सुनिश्चित करती है। इस शोध में नये एवं परिवर्तित एवं नये भवनों के विकल्पों का आंकलन करने के लिए एक सहायक के रूप में कार्य करता है। सुरक्षा और स्थिरता ही सफल इमारतों की प्रमुख विशेषताएं, पहचान और सजावट और संकेत एवं आंतरिक सुविधाओं से परिपूर्ण हो जायेगें। इस शोध कार्य में दुनिया भर के वास्तविक पुस्तकालय के उदाहरणों का एक विशाल संसाधन एकत्र करता है जो कि सीखने का सर्वोत्तम अभ्यास प्रदान करता है। शोध में विभिन्न मानकों को ध्यान में रखते हुए किसी भी पुस्तकालय में भवन निर्माण व बैठक व्यवस्था किया जाता है।

मुख्य शब्द

पुस्तकालय भवन, पुस्तकालय संग्रहागार, पुस्तकालय आकार, सूचना संग्रहण.

परिचय

सूचना के आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय की भूमिका महत्वपूर्ण है। किसी भी लाईब्रेरी के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उनके पास एक आकर्षक एवं प्रभावी संसाधन हो। भवन सही स्थान पर जब तक पुस्तकालय भवन व पुस्तकालय फर्नीचर व्यवस्थित न हों तब तक पुस्तकालय में पाठकों की कमी देखने को मिलती रहेगी। पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर पुस्तकालय की प्राथमिक आवश्यकताएं होती है इनका विकास एवं निर्माण करना अति आवश्यक है। पुस्तकालय में पाठकों की बैठक व्यवस्था, अनुसंधान कक्ष, सेमिनार कक्ष, पत्र–पत्रिका विभाग कक्ष, आदान–प्रदान विभाग कक्ष, तकनीकी विभाग कक्ष एवं अन्य कक्षों का विकास करना आवश्यक है। पुस्तकालय संसाधन सुलभ एवं सरल तथा व्यवस्थित होना चाहिए। सूचना तकनीकी, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर संसाधन एक आधुनिक पुस्तकालय और सूचना केंद्र को आधुनिक सूचना तकनीकी के उपयोग पर जोर देना चाहिए जिसमें कम्प्यूटर के साथ रिप्रोग्राफिक शामिल है। डिजिटलीकरण और माइक्रोग्राफिक उपकरण एवं अन्य चीजों के अलावा और इसके लिए सुविधाएं भी बनानी और विकसित करनी चाहिए अन्यथा सूचना की दुनिया तक इसकी पहुंच में बाधा आएगी। सूचना, दस्तावेज संसाधन संगठन के भीतर एक संपीड़ित संग्रह दस्तावेजी सूचना संसाधनों का चाहे प्राथमिक, द्वितीयक या तृतीयक निर्माण किया जाना चाहिए। संग्रह को उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाना चाहिए, यदि विश्वविद्यालय पुस्तकालय की योजना बनाई जा रही है तो स्नातकोत्तर छात्रों के साथ–साथ अनुसंधानकर्ताओं पर भी विचार किया जाना चाहिए। इसी तरह एक विशेष पुस्तकालय अपने मूल संगठन की आवश्यकताओं के अनुसार पुस्तकालय या सूचना केंद्र चाहे कितना भी संसाधनपूर्ण क्यों न हो सूचना के मामलें में आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है। पुस्तकालय विज्ञान के पांचवे सूत्र में रंगनाथन जी ने कहा है कि, पुस्तकालय एक बढ़ती हुई संस्था है अर्थात् प्रतिवर्ष पाठ्य सामग्री में वृद्धि के कारण स्थान की कमीं देखने को मिलती है, इसे दूर करने के लिए सुनियोजित भवन का निर्माण करना अति आवश्यक हो जाता है।

साहित्य समीक्षा

मित्तल, आर. एल.,(1983) ने अपने लेख में लाईबेरी बिल्डिंग को आधुनिक तकनीकी मानकों के आधार पर निर्माण करने के नियमों को विस्तार से बताया है और अलग–अलग प्रकार के लाईब्रेरी में किस प्रकार का मानक तय किया जाये इस बात पर भी जोर दिया है। लेखक ने बताया है कि भवन एवं फर्नीचर निर्माण इस प्रकार होना चाहिए जिससे पाठक बैठने और पढ़ने में किसी भी प्रकार की असुविधा न हों। इस लेख के माध्यम से लेखक ने लाइब्रेरी एडमिनिस्ट्रेशन की नीतियों को शिरोधार्य करते हुए भवन एवं फर्नीचर के विवरण पर जोर दिया हैं।

चौरसिया, नीरज कुमार ने बताया है कि फिजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर से लेकर डिजिटल लाइब्रेरी सर्विसेज में मेन से मशीन कार्ड कैटलॉग से लेकर ऑनलाइन कैटलॉग तक शुरू होता है। मानक मानव जाति के हर क्षेत्र में उत्पाद और सेवाओं की गुणवत्ता मात्रा, एकरूपता और विनिमय भूमिका निर्धारित करनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय मानकीकरण के नियम का भी पालन करते है ताकि पाठकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवा, उत्पाद और सेवाएं सुनिश्चित की जा सकें।

शर्मा, प्रहलाद, (2012) इस पुस्तक में पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर को किस प्रकार से व्यवस्थित किया जाना चाहिए एवं मानक के द्वारा कैसे भवन एवं फर्नीचर मापन किया जाना चाहिए, इस पत्र में लेखक ने भवन फर्नीचर के आकर्षण पर जोर दिया है जिससे पुस्तकालय में पाठकों की संख्या में वृद्धि हो सकें। लेखक ने इस लेख में अपने सिद्धांत में बताया है कि पुस्तकालय भवन का निर्माण सिद्धांतों के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए, जिससे पुस्तकालयों के उद्देश्यों को आसानी से पूरा किया जा सके।

डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने अपने इस लेख में बताया है कि किस प्रकार से हम पुस्तकालय भवन को सुन्दर एवं व्यवस्थित तथा आकर्षित बना सकें। रंगनाथन जी ने अपने लेख में पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर के विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से पुस्तकालय को सही तरीके से संचालित करने के उपाय बतायें। इसमें पुस्तकालय संसाधनों के व्यवस्थीकरण एवं मानकीकरण पर जोर दिया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

पुस्तकालय के परिप्रेक्ष्य में इस अध्ययन का यही उद्देश्य है कि पुस्तकालय भवनों को संरचनात्मक एवं व्यवस्थित तथा मानक के अनुरूप होना चाहिए। किसी भी पुस्तकालय का सबसे प्रमुख उद्देश्य यही होता है कि पाठकों में ज्ञान का संचार करना, पाठकों में ज्ञान का संचार तभी संभव है जब पुस्तकालय भवन आधुनिक एवं आकर्षित हों। अगर पुस्तकालय में बैठक व्यवस्था पाठकों के अनुरूप नहीं है तो पाठक लाईबेरी में आना नहीं चाहेगा इसीलिए भवन एवं फर्नीचर को आकर्षित एवं सुंदर होना चाहिए जिसमें पाठक सहज होकर अध्यापन कर सकें। पुस्तकालय कें भवनों को इस प्रकार से बनाना चहिए की सभी कक्ष पुस्तकालयाध्यक्ष कक्ष से जुडा रहे। भवन इस प्रकार से होना चाहिए कि रंगनाथन जी द्वारा दिये गये पांचवें सूत्र से संबंधित हों। लाईबेरी का निर्माण के समय पाठक के प्रकृति एवं संस्था के उद्देश्यों को भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इस संबंध में मेटकॉफ ने पुस्तकालय भवन के बारे में बताते हुए कहा कि ''पुस्तकालय भवन शैक्षणिक जीवन का एक प्राकृतिक केन्द्र है जिसे समुदाय के अध्ययन एवं शोध सुविधा में आवश्यक साधन एवं सुविधायें प्रदान करनी चाहियें। पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचरों को आगे पड़ने वाली आवश्कताओं को ध्यान में रख के करना। पुस्तकालय में भवनों में फर्नीचरों को एक निश्चित मानकों के अनुरूप होना चाहिए जिससे पाठकों को आसानी से बैठते हुए बने।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र की पद्धति गुणात्मक तथ्यों पर आधारित है। शोध प्रविधि के अंतर्गत अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त साहित्य का वैज्ञानिक विधियों से अध्ययन द्वारा वैध एवं विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त कर अध्ययन विषय की अर्थपूर्ण व्याख्या की गई है। साथ ही साथ, शोध पत्र की मौलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। प्रत्यक्ष रूप से ग्रंथालय में उपलब्ध पंजिकाओं की सहायता से इस कार्य को संपन्न किया गया है।

पुस्तकालय भवन की रूपरेखा

भवन की बनावटः पुस्तकालय भवन की बनावट इस प्रकार से होना चाहिए पाठक खुद से आकर्षित हो जायें। जब पुस्तकालय भवन बनाना हो तब इस बात का ध्यान रखना चाहिए की पाठक वहां से आसानी से आ एवं जा सकें और ये भी ध्यान रखा जाये कि पाठक को किसी भी प्रकार की असुविधा वहां पर नहीं होना चाहिए अर्थात् पाठकों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

भावी समय में लोचशीलता की सम्भावनाः डॉ. एस आर रंगनाथन जी ने अपने पॉचवे सूत्र में बताया है कि पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है अर्थात् पुस्तकालय नित नये दिन आकार बढ़ते जाता है इसीलिए पुस्तकालय भवन को इस तरह से निर्माण करना चाहिए जिसे बाद में अगर उसमें कुछ परिवर्तन लाना हो तो आसानी परिवर्तन किया जा सकें।

भवन का आंतरिक भाग की संरचनाः पुस्तकालय की मुख्य भाग के साथ–साथ उसके आंतरिक भागों का निर्माण भी बड़े ध्यान से करना चाहिए। भीतरी भाग की बनावट भी इस प्रकार का होना चाहिए की समस्त विभाग एवं उनकी सेवाओं का संचालन सुचारू रूप से किया जा सकें।

वातावरण का ध्यानः पुस्तकालय भवन बनाते समय आसपास के वातावरण को भी ध्यान में रख कर करना चाहिए। भवन निर्माण के समय प्रकाश और हवा की उचित व्यवस्था होनी चाहिएं।

पाठकों की सुविधाओं का विशेष ध्यानः पुस्तकालय का सबसे मुख्य तत्व पाठक होता है इसीलिए जब भी पुस्तकालय भवन का निर्माण करना हो पाठकों के प्रकृति एवं उनकी सुविधाओं का ध्यान निश्चित रूप से रखा

जाना चाहिए। पुस्तकालय का निर्माण ऐसी जगह पर होना चाहिए जहाँ पर पाठक बहुत ही आसानी से आ जा सकें अर्थात् कम से कम समय में लाइब्रेरी पहुंच सके। अगर कोई युनीवर्सिटी है तो पुस्तकालय भवन वहाँ के केंद्र में स्थित होनी चाहिए इसीलिए कहा भी गया है कि किसी भी शैक्षणिक संस्थाओं जैसे स्कुल, कॉलेज या विश्वविद्यालय का हृदय स्थल वहाँ की पुस्तकालय ही होता है क्योंकि सभी विभागों में सामान्य रूप से ज्ञान का संचार पुस्तकालयों द्वारा ही किया जाता है।

पुस्तकालय भवन एवं बैठक व्यवस्था में शामिल समूहों के नाम

पुस्तकालय में भवन एवं फर्नीचर के निर्माण की योजना एक महत्वपूर्ण कार्य है। भवन निर्माण का कार्य काफी महंगा होता है यह कार्य इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसे केवल एक ही बार में बनाना होता है क्योंकि एक बार भवन के बन जाने के बाद उसे परिवर्तित करना आसान नहीं है। इसीलिए जब भी भवन निर्माण करना है तो बहुत ही सोच–समझकर करना चाहिए। अतः सही नीति के साथ इसका निर्माण करना चाहिए इसीलिए पुस्तकालय भवन के निर्माण में निम्नलिखित कार्यकारी समूह को चयन किया जाता है जिनसे पुस्तकालय भवन व्यवस्थित रूप से बन सके।

पुस्तकालयाध्यक्षः भवन निर्माण में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण व्यक्ति पुस्तकालयाध्यक्ष ही होता है। इस प्रक्रिया में वह नीति निर्माण में सहायक होता है, पुस्तकालय भवन में आने वाले खर्चों का हिसाब रखता है। जो भी निर्माण में आवश्यक वस्तुएं होती है उनका लेखा तैयार करता है इसीलिये पुस्तकालयाध्यक्ष के द्वारा बनाई गई रणनीतियों पर फोकस किया जाना चाहिए।

प्रबन्धन का प्रतिनिधित्वः जिस प्रकार पुस्तकालय भवन के निर्माण में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका होती है लगभग प्रबन्धन के प्रतिनिधि का भी होता है। यह व्यक्ति भी नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करता है और पुस्तकालयाध्यक्ष के साथ कार्य को सुचारू रूप से संपन्न करता है।

वास्तुशिल्पकारः पुस्तकालय भवन का निर्माण भौतिक रूप से वास्तुशिल्पकार के द्वारा ही किया जाता है। यही वह व्यक्ति होता है जो भवन का निर्माण अपने हाथों से करता है। यह व्यक्ति पुस्तकालयाध्यक्ष के निर्देशों का पालन करते हुए कार्य को संपन्न करता है और बहुत ही आकर्षक पुस्तकालय भवन का निर्माण करता है।

विभिन्न संकाय एवं छात्रों के प्रतिनिधिः पुस्तकालय भवनों एवं फर्नीचर के निर्माण में संकाय एवं छात्रों के प्रतिनिधियें द्वारा भी एक महत्वपूर्ण कार्य किया जाता हैं क्योंकि पुस्तकालय का उपयोग पाठकों एवं शिक्षकों के द्वारा सबसे अधिक किया जाता है इसलिए इन लोगों को यह पता होता है कि किस प्रकार का भवन या फर्नीचर बनने चाहिए और इसलिए इनकी भी राय लेना महतवपूर्ण हो जाता है।

पुस्तकालय भवन एवं योजना निर्माण के मुख्य चरण

कार्यक्रमः पुस्तकालय भवन योजना निर्माण में कार्यक्रम को बनाना महत्वपूर्ण होता है। इसके अंतर्गत यह देखना होता है कि वहां कुल कितने पाठक एवं शिक्षक आते है। पुस्तकालय की बनावट किस प्रकार का है, उसके बाद यह भी देखा जाता है संग्रहित पाठ्य सामग्री की मात्रा कितनी है। सबसे मुख्य बात यह है कि उस लाईब्रेरी की आर्थिक स्थिति कैसी है तथा लाईब्रेरी के द्वारा दिया जाने वाला सर्विस किस प्रकार का है यह सब ध्यान रखा जाता है।

आरम्भिक योजनाः इस चरण में जो शिल्पकार होता है वह पुस्तकालयाध्यक्ष के द्वारा बताई गई बातों को ध्यान में रखते हुए प्रारूप या रेखांकन करता हैं। दोनों की आपसी सहमती हो जाने के बाद पुस्तकालय भवन का निर्माण प्रारम्भ किया जाता है।

क्रियात्मक योजनाः इस प्रकार के योजना में पुस्तकालयों भवनों के विभिन्न अनुभागों की रूपरेखा आदि का विस्तृत विवरण शामिल होता है। पहले के पुस्तकालयों में पुस्तकालयाध्यक्ष की कोई खास भूमिका नहीं रहता था परंतु धीरे–धीरे पुस्तकालय के सिद्धांत और अवधारणाओं के चलते पुस्तकालयाध्यक्ष को भी एक अलग महत्व दिया जाने लगा। इस क्रियात्मक योजना में पुस्तकालय भवन किस–किस अनुभाग को कब–कब करना है ये निर्धारित किया जाता है।

पुस्तकालय भवन के विभिन्न सिद्धांत

पुस्तकालय भवन के विभन्न सिद्धांतों की सहायता से पुस्तकालय भवन को इस तरह से बनाया गया है जिससे पुस्तकालय के विभिन्न अनुभागों में बनायें गये भवनों की रूपरेखा कैसी होनी चाहिए और उसे कैसे आकर्षण का केंद्र बनाया जाय इस पर फोकस किया है। यह सिद्धांत निम्नलिखित हैः

बूचार्ड का सिद्धांतः बूर्चार्ड महोदय ने पुस्तकालय भवन के लिए महत्वपूर्ण सिध्दांत दिये है। आधुनिक पुस्तकालयों को इस प्रकार से बनाना होगा जिसमें पाठक की बैठक व्यवस्था संग्रह कक्ष समीप हो जिससे होगा ये कि पाठक आसानी से संग्रह कक्ष से पुस्तकें कम से कम समय में प्राप्त कर सकें। बूचार्ड महोदय ने और कहा कि पुस्तकालयों मे जो विभिन्न प्रकार कार्य होते है उसे ध्यान में रखतें हुए पुस्तकालय भवन की योजना बनाना चाहिए साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि पाठकों की संख्या और उसके लेवल कैसा है। पुस्तकालय भवन को इस तरीके से बनाना होगा जिसमें आगे की कार्ययोजना शामिल हो, क्योंकि भविष्य में पुस्तकालय का स्वरूप बड़ा होगा ही तब नये बिल्डिंग की आवश्यकता पड़ेगी। इसमें ये भी देखना होगा की पुस्तकालय भवनों में कक्ष इस तरह से निर्माण होना चाहिए की कम से कम कर्मचारी भी चीजों को आसानी से मैनेज कर सकें और भवनों के निर्माण में प्रशासनिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए संपन्न करने का प्रयास करेंगें।

हेनरी फालकर का सिद्धांतः फालकर महोदय ने पुस्तकालय भवन निर्माण योजना के अंतर्गत 10 प्रकार के सूत्रों का प्रतिपादन किया है जो निम्न प्रकार के हैः–

सुविधाजनकः पुस्तकालय कर्मचारियों और पुस्तकों के आवागमन की दृष्टि से पुस्तकालय भवन सरल और सुविधाजनक होना चाहिए।

दिशानिर्देशः पुस्तकालय में जो भी कार्य संपादित किये जाते है उसका सही, सरल एवं आसानीपूर्वक दिशानिर्देश तैयार करना चाहिए। जिससे पाठकों को पुस्तकालय के कार्यों की भली–भॉति जानकारी हो सकें तथा पाठक अनुशासित होकर पाठ्य सामग्री का सहीं तरीके से उपयोग कर सकें।

परिवर्तनशीलताः फालकर ने अपने सिद्धांत में परिवर्तनशीलता को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत माना है और उसके अनुसार पुस्तकालय की संरचना तथा सेवाओं के निष्पादन की दृष्टि से लचीला होना चाहिए अर्थात् परिवर्तनशील होनी चाहिए जिससे अगर पुस्तकालय भवन की संरचना में कभी भविष्य में परिवर्तन की आवश्यकता पडती है तो आसानी से कर सकें।

सुगमताः पुस्तकालय सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग हो सकें इस दृष्टि से भवन का निर्माण होना चाहिए।

विविधताः पाठक अपनी सुविधा से पाठ्य सामग्री का चुनाव कर संकेत तथा उसे पठन कार्य के लिए पर्याप्त स्थान मिल सकें इस तरह से भवनों में विविधता होनी चाहिए।

सुसंगठितः पाठकों और पुस्तकों के बीच निकटता के आधार पर पुस्तकालय भवन संगठित होनी चाहिए।

स्थिरताः पुस्तकों की सुरक्षा की दृष्टि से देखा जाए तो उपर्युक्त पर्यावरणीय स्थिति प्रदान कर सकें इस हेतु पुस्तकालय भवन स्थिर होना चाहिए।

सुरक्षाः पुस्तकों के क्षति और चोरी को रोकने तथा पाठकों के व्यवहारों को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय भवन का निर्माण करना चाहिए।

सुगम पहुंचः पुस्तकालय का निर्माण इस प्रकार से होना चाहिए कि न्यूनतम निर्देशों से पाठकों को आसानी से भवन के सभी विभागों में पहुंचाया जा सकें।

निरंतरताः बिना किसी अवरोध के ही भविष्य की आवश्यकतानुसार पुस्तकालय भवन का निर्माण किया जाना चाहिए।

सूलस के सिद्धांतः सूलस ने पुस्तकालय भवन हेतु महत्वपूर्ण सिद्धांतो का वर्णन किया है। इन्होनें इस

सिद्धांत में यह कहा है कि पुस्तकालयों के कार्यों और समाज को दी जाने वाली सेवाओं को संयोजित करते हुए भवन का निर्माण करना चाहिए। पुस्तकालय भवनों को आंतरिक और बाह्य दोनो तरफ से आकर्षित बनाना चाहिए और शिल्पकार के निर्माण भूमिका को नहीं भूलना चाहिए। इस कार्य हेतु भविष्य में विकास की सम्भावना को देखते हुए ही पूरा प्रावधान रखने चाहिए। प्रशासन की मितव्ययिता को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय भवन की आयोजना का निर्माण करना चाहिए। आधुनिक आवश्कताओं को ध्यान में रखते हुए पाठकों को पुस्तकों के समीप बैठनें की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

एन्थॅनी थॉमसन का सिद्धांतः एन्थॅनी थॉमसन ने पुस्तकालय के सभी क्षेत्रों को तीन भागों में बांटा हैः–

वार्तालाप का क्षेत्रः इसके अंतर्गत थॉमसन ने सन्दर्भ कक्ष, शोध कक्ष, पत्र–पत्रिका क्षेत्र और संग्रहार वाला क्षेत्र आतें है।

शोरगुल वाला क्षेत्रः इस क्षेत्र के अंतर्गत कर्मचारी कक्ष, प्रवेश द्वार, पत्रक कक्ष, प्रदर्शन का स्थान, आदान–प्रदान वाला क्षेत्र, संगोष्ठी कक्ष आदि स्थान आते है।

शान्ति वाला क्षेत्रः पुस्तकालय के कुछ अन्य विभाग शान्ति के क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पुस्तकालय भवन के विभिन्न कक्ष

पुस्तकालय भवन योजना के प्रारूप तैयार करने के लिए विभिन्न मानकों के आधार पर एवं कर्मचारियों एवं छात्रों के बताये अनुसार कार्य करनें चाहिए, जिसमें विभिन्न कक्षों का निर्माण किया जा सकता हैः–

संग्रह कक्षः पुस्तकालय में देखा जाए तो निरंतरता के साथ साहित्य सामग्रीयों की बढ़ोत्तरी होते रहते है इसीलिए संग्रह कक्ष को कुछ मानकों के अनुसार बहुत अच्छे से निर्माण किया जा सकता है। पुस्तकालय में जैसे–जैसे संग्रह बढ़ते जायेगें उसी तरह पुस्तकालय भवन का निर्माण करने होगें। इस परिपेक्ष्य में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने साहित्यों की संख्या के आधार पर विश्वविद्यालय हेतु चार एवं महाविद्यालय हेतु दो संग्रह कक्षों के निर्माण पर जोर दिया है। जिसमें कक्ष की उंचाई 2.35 मीटर, लम्बाई 1.80 मीटर से लेकर 3.15 मीटर और चौड़ाई 8 मीटर होना चाहिए।

छायाचित्रः पुस्तकालय संग्रह कक्ष

छायाचित्रः पत्रिका संग्रह कक्ष

छायाचित्रः भण्डार कक्ष के मानक

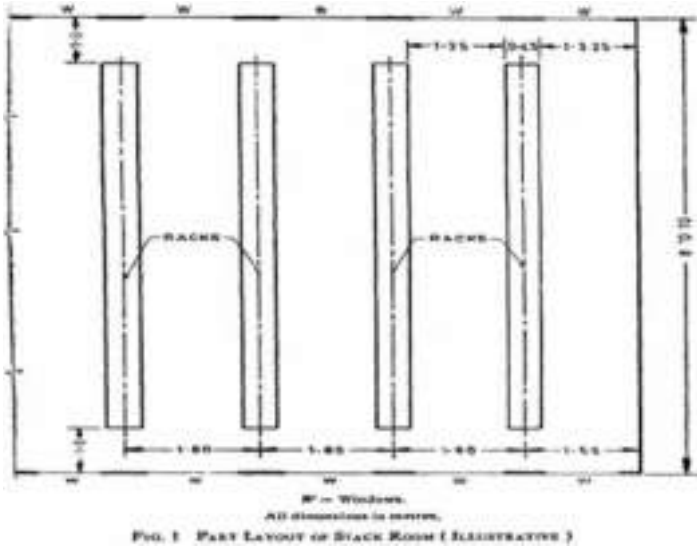

(**स्रोतः** https://law.resource.org/pub/in/bis/S03/is.1553.1989.pdf)

कर्मचारियों के लिए कक्षः पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए भी अलग–अलग मानक दिया जाता हैं जैसे कि पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए 30 वर्गमीटर, वर्गाकार और सूचीकार और अनुरक्षण कक्ष 9 मीटर एवं विजिटर कक्ष 15 वर्ग मीटर तक होना चाहिए।

अध्ययन कक्षः पुस्तकालय भवन के अंतर्गत अध्ययन कक्ष का निर्माण एक महत्वपूर्ण निर्माण होता हैं जिसे अलग–अलग समितियों एवं व्यक्तियों ने अपने–अपने मानकों को बताया है जैसे कि डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने 22 वर्गफीट प्रति छात्र स्थान को बताया है। उसी प्रकार कार्नेगी रिपोर्ट की बात किया जाय तो इसमे 35–40 वर्गफीट प्रति छात्र होना चाहिए एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुसार 20 प्रतिशत छात्रों एवं 10 प्रतिशत अध्यापकों के लिए निर्धारित किये गये है।

छायाचित्रः पुस्तकालय अध्ययन कक्ष

विश्लेषण

तथ्यों के वर्गीकरण, विश्लेषण की व्याख्या के बिना अनुसंधान कार्य अपूर्ण है। अध्ययन की बिखरी हुई सामग्री को व्यवस्थित करके तथ्यों का विश्लेषण किया गया है जिसके बाद अध्ययन से संबंधित समस्या के वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त हुए है जिसमें विभिन्न प्रकार के विधियों एवं नियमों के द्वारा सही तरीके से सत्यापन किया जा सकता है। पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर की पुरानी पद्धति को परिवर्तीत करके नवीन परिवर्तनों पर जोर दिया गया हैं जो कि इस शोध को विश्वसनीय बनाता है। पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर अगर मानक तरीके से नहीं बनाया जाता है तो इसका सीधा असर पुस्तकालय सेवाओं एवं पाठकों में पुस्तकालय में अध्ययन की रूचि में कमी देखी जाती है।

निष्कर्ष व सुझाव

इस शोध से हमें यह ज्ञात होता है कि हमारे भारत के पुस्तकालयों की वहीं पुरानी पद्धति का उपयोग आज भी किये जा रहें है जिसके कारण से पुस्तकालयों में पाठकों के आकर्षण में कमी देखने को मिल रही है। उपरोक्त

विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य विस्फोट एवं प्रकाशनों में वृद्धि के कारण पुस्तकालयों में पुस्तकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है जिसके कारण से आज के परिवेश में पुस्तकालयों को आधुनिक रूप से विकसित करना एवं पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर में भी संरचनात्मक एवं आकर्षणात्मक रूपों को अपनाने की आवश्यकता पड़ रही है। सूचना विस्फोट को देखते हुए पुस्तकालय भवन के आकार में वृद्धि करने की नितांत आवश्यकता हो रही है। कहा जाता है कि आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है इसीलिए जैसे–जैसे आधुनिक परिवर्तन हो रहें है उसी प्रकार से हमें पुस्तकालय के आकारों में उनके मानकों में परिवर्तन करना चाहिए। पुस्तकालय भवनों को आकर्षण का केंद्र बनाने के लिए जोर दिया जाना चाहिए जिससे पाठकों की संख्या में वृद्धि हो सके। अगर हमारे पुस्तकालय भवन का आकार कम है तो जाहिर सी बात हैं कि वहां पर पाठ्य सामग्री की कमी रहेगी और बैठने की उचित व्यवस्था नही हो पायेगी, इन सभी कारणों से पाठक की रूचि पर एक गहरा असर देखने को मिलता है, नतीजन पाठक पुस्तकालय में आना नहीं चाहते और अगर पाठक पुस्तकालय नहीं आयेंगें तो पुस्तकालय का उपयोग नहीं हो पायेगा। अतः पुस्तकालय के अस्तित्व को बचाने के लिए पुस्तकालय भवन एवं फर्नीचर को आधुनिक तरीकों एवं मानकों की सहायता से ठीक करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. चौरसिया, नीरज कुमार, (16 मई 2017) *लाईब्रेरी स्टॉक मैनेजमेंटः एक केस स्टडी,* महर्षी मारकंडेश्वर यूनिवर्सिटी हरियाणा।
2. मित्तल, आर. एल.,(1983) *लाईब्रेरी एडमिस्ट्रेशनः थ्योरी एंड पैक्टिस,* 5वां प्रकाशन, मेट्रोपोलिटन बुक कम्पनी, नई दिल्ली।
3. शर्मा, प्रहलाद, (2012) *पुस्तकालय प्रबन्ध,* पेज संख्या 203, युनीवर्सिटी पब्लिकेशन, जयपुर राजस्थान।
4. रंगनाथन, एस. आर. (1960) लाईबेरी मैन्युअलः फॉर लाईब्रेरी आथॉरिटी, *लाईब्रेरियन एण्ड लाईबेरी*।
5. https://www.studocu.com/in/document/jamia-millia-islamia/library-science/library-building-and-furniture/22975882
6. https://www.slideshare.net/PerumalA2/library-building-furniture-equipment-and-its-standards
7. https://www./Library-Building-Furniture-Design-Planning/dp/8170003814Library-Building-Furniture-Design-Planning/dp/8170003814
8. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/33057/1/Unit-4.pdf

****